Mennonite World Conference
A Community of Anabaptist related Churches

शांति रविवार 2025
आराधना के लिए संसाधन

mwc-cmm.org

एमडब्ल्यूसी पीस कमीशन द्वारा 21 सितंबर 2025 के लिए तैयार किया गया

1 उद्देश्य और विषय

- **उद्देश्य:**

प्रेम करने का साहस

- **यह उद्देश्य क्यों चुना गया?**

प्रेम को प्रदर्शित करना एक साहसीपूर्ण कार्य है। प्रभु यीशु मसीह अपने चेलों (सुननेवालों) से बार बार यह आव्हान करते हैं और उन्हें प्रोत्साहित करते हैं कि भले ही प्रेम से संबंधित कार्यों को करना कितना ही खतरनाक या साहसिक क्यों न हो, उन्हें इन प्रेम से जुड़े कार्यों को प्रकट करते रहना है।
शांति रविवार के यह संसाधन इसलिए दिए गए हैं कि हम उन तरीकों को खोजें, विकसित करें और ढूंढ निकालें जिससे हम संसार में और संसार के लिए साहसी रूप से अपने प्रेम को प्रदर्शित करने वाले हो सकें।

- **बाइबल पाठ:**

मत्ती 22: 34—40
जब फरीसियों ने सुना कि यीशु ने सदूकियों का मुँह बन्द कर दिया, तो वे इकट्ठा हुए। उनमें से एक व्यवस्थापक ने उसे परखने के लिये उससे पूछा, "हे गुरु, व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?" उसने उससे कहा, "तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख। ये ही दो आज्ञाएँ सारी व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं का आधार हैं।"

2 प्रार्थना विषय

- हम मेल मिलाप की इस सेवा में मसीह के सहकर्मी कहलाये जाकर, अपने साथ, अपने पड़ोसियों और "दुश्मनों" के साथ और सारी रची हुई सृष्टि के साथ और परमेश्वर के साथ शांति बनाकर रखने के लिए हर दिन अपने मनों को खोलकर जीने वाले हो सकें।
- जब हम हिंसा, ध्रुवीकरण और हमारे ही समाज में और पूरे विश्व में युद्ध होते हुए देखते हैं, तो ऐसा हो की हम उन ताकतों को जो अलग करना और मार डालना चाहती हैं, कुछ रचनात्मक और साहसपूर्वक रीति से, आत्मा की आवाज को सुनते हुए, उनका विरोध कर सकें। हम इस युद्ध के समय में विशेष रूप से अपने ऐनाबैपटिस्ट परिवार के लिए प्रार्थना करते हैं जो ईथीयोपिया, म्यांमार, यूक्रेन, होण्डुरस, इकुआड़ोर, कोलंबीया और अमरीका में हिंसा के कारण सताये जाते हैं।
- हम उन पालिश्ती लोगों के लिए जो कई पीड़ाओं को सह रहे हैं, उनके लिए विशेष प्रार्थना करते हैं। वहाँ के मसीहीयों ने 2000 सालों से अधिक, मसीह की शांति को जीकर दिखाया है। परमेश्वर इस भयानक पीड़ा के समय में उनके दृढ़ता को और भी मजबूत करे। पूरे संसार भर में पाए जाने वाले मसीहीयों में यह साहस पाया जाए कि वे अपने इन भाई बहनों की सहायता करने के लिए आगे आयें।
- हम इस अवसर के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं कि हम अपने वैश्विक ऐनाबैपटिस्ट परिवार के साथ चलते हुए, विभिन्नताओं के मध्य में, एकता का अभ्यास कर पा रहे हैं। हम सामाजिक तौर से अपने अधिकार को समझते हुए, सरकार के खिलाफ एक होकर आवाज उठाने वाले होने पाएँ। हम एक दूसरे से सीखते हुए और एक दूसरे से प्रेम रखते हुए, एक होकर मसीह के अनुयायी हो जाएँ।

3 गीत के सुझाव

♫ **वी वान्ट पीस**
youtu.be/7KzDDlSnBRw

♫ **वी विल मेक नो पीस वित औप्रेशन**
youtube.com/watch?v=L57GTkvU8qo

इन गीतों का सार्वजनिक सभा में उपयोग करने से पहले, अपनी कलिसिया के कापीराइट प्रोटोकॉल की जांच करे लें।

4 अतिरिक्त संसाधन

mwc-cmm.org/peacesunday

➢ **इस पैकेज के अतिरिक्त संसाधन**
- प्रार्थनाएं
- शिक्षा के लिए संसाधन
- गवाही
- गीत के बारे में जानकारी

➢ **आनलाईन में उपलब्ध अतिरिक्त संसाधन**
- तस्वीरें (इस पैकेज में उपयोग की गई तस्वीरें भी सम्मिलित हैं)

5 गतिविधियां

आपका पड़ोसी कौन है? या सुसमाचार क्या है?

"दयालु सामरी के नाटक" (लुका 10:25–37) का अभिनय एक समूह के सामने प्रस्तुत करें

या

"सुसमाचार" के अर्थ को इस कहानी में खोजें और लुका 4 में प्रस्तुत किए गए विभिन्न प्रायोगिक तरिकों पर ध्यान चिंतन करें।

1. चार हफ्तों के अंतराल में दिए गए नियत कार्य को साथ मिलकर खोजने के लिए बहु–पीढ़ीगत (विभिन्न पीढ़ियों के) समूहों को तैयार करें।
2. इन समूहों में, इन प्रश्नों पर विचार करने को कहें कि आप किन तरीकों से **स्वयं के दयालु सामरी पे आधारित कार्यों में वचनबद्ध** हो सकते हैं या **सुसमाचार को किस प्रकार से ढूँढ सकते है** जो समाज में निम्नलिखित तरीकों में पाए जा सकते हैं
   - साहसी
   - सांस्कृतिक विरोध
   - खतरनाक
3. इन चार हफ्तों में आप अपने समाज में इन कार्यों को सम्पन्न करें।
4. हर हफ्ते हमारे साथ अपनी कहानियों को साझा करें
   - वापस आकर अपने समूह के साथ इन बातों पर चर्चा करें:
     - आप किन कार्यों का अभिनय कर रहे हैं?
     - आप जिन कार्यों को करेंगे, इस बात का निर्णय आपने किस प्रकार से लिया?
     - आपका अनुभव क्या रहा?
   - आप अपने आराधना सभा में इससे जुड़ी हुई अच्छी और बुरी बातों को साझा करें।
5. अपने समूह के द्वारा लिए गए निर्णयों को, उठाए गए कदमों को और आपके विचारों को एक सामान्य दीवार या बोर्ड पर लिख लें।
   अपने गतिविधियों का एक नक्शा बना लें।

With permission, send your story and photo to photo@mwc-cmm.org to share with the global Anabaptist family.

Michael Hostetler

Kenya Mennonite Church Diocese of Nairobi

Los Hermanos Menonitas de Cali, Colombia

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें:
एंड्रयू सुडरमैन | एमडब्ल्यूसी पीस कमीशन सचिव **AndrewSuderman@mwc-cmm.org** | **mwc-cmm.org/peace-commission**

आपने अपने जीवनों में शांति का अभ्यास करने के लिए इन संसाधनों का कैसे उपयोग किया?
अपनी कहानियाँ, चित्र, वीडियो या कलाकृतियाँ को **photos@mwc-cmm.org** पर भेजें।

इस पैकेज में सम्मिलित बाइबल पाठ, प्रार्थनाएँ, गीत के सुझाव, संदेश/उपदेश के विचार, गवाहियाँ और अन्य संसाधन, एमडब्ल्यूसी के सदस्यों द्वारा उनके स्थानीय संदर्भ में उनके अनुभव के आधार पर तैयार किए गए हैं। यह शिक्षा आवश्यक रूप से एमडब्ल्यूसी की आधिकारिक स्थिति का प्रतिनिधित्व नहीं करती है।

प्रार्थनाएँ

आज के समय के लिए प्रार्थना

उत्तरवादी पाठ: साधारण अक्षरों में लिखे गए वाक्य किसी एक व्यक्ति द्वारा पढ़ा जाए, मोठे अक्षरों में लिखे गए वाक्यों को बाकी सारे लोगों के द्वारा पढ़ा जाए। मोठे और टेढ़े अक्षरों मे लिखे गए वाक्यों को सारे लोगों द्वारा पढ़ा जाए।

आश्चर्यजनक रूप से जन्मे हुए परमेश्वर,
तू वह उद्धारकर्ता नहीं हैं जिसकी हम अपेक्षा करते हैं,
तेरी सामर्थ उस सामर्थ के समान नहीं दिख पड़ती
जिसे हम चाहते हैं कि हमारा परमेश्वर प्रदर्शित करे।

हम प्रतीक्षा करते हैं।
हम अँधियारे में प्रतीक्षा करते हैं।
हम कष्टों में प्रतीक्षा करते हैं और हम आशा में प्रतीक्षा करते हैं।
हम प्रतीक्षा करते हैं, यह जानते हुए कि हमें एक दूसरे की और उस आशा को थाम कर रखने में तेरी उपस्थिति की आवश्यकता है।
हमने हानी की है और शब्दों और कार्यों के द्वारा और कई चीजों को न करने के द्वारा हमने हानी उठाई भी है।

हम यह जानते हैं कि हानी होना अंत नहीं है, हम यह जानते हैं कि हमारे एक साथ होकर रहने में और तेरी उपस्थिति में, हानी जो है एकता में परिवर्तित हो सकती ही।

भोलेपन में (साधारण रीति से) जन्में हुए परमेश्वर
तेरा अनुग्रह हमें हैरान कर देता है।
हम जहां भी हो, तू हमें वहाँ मिलता है, इस कारण तेरी दया से हम उसी दशा में नहीं पड़े हुए होते जहां हम पहले पाए गए हों।

हम बाट जोहते हैं।
हम इस अनुग्रह की प्रतीक्षा में बाट जोहते है।
हम बाट जोहते है, अँधियारे में झाँककर, यह जानते हुए की तेरा उजियाला प्राप्त हो सकता है।

हम अपने बेढंगे तौर–तरीकों में यह आशा रखते हैं कि हम तेरे उस अनुग्रह को अपने आसपास के लोगों को दर्शा पाएँ।

यह होने दे कि हम एक दूसरे से उन उपहारों को नम्रतापूर्वक ग्रहण करने वालों हो सकें, यह जानते हुए की तेरी परिवर्तन करने वाली सामर्थ उन्हें उनके नियति के अनुसार बदल सकती है।

नम्रतापूर्वक जन्मे हुए परमेश्वर
तेरे बारे में हमारी धारणाओं को तथा हमारे एक दूसरे के प्रति अनुमानों को तू गड़बड़ कर देता है,
जिससे तू न्याय को समझौते में; भेदभाव को एकजुटता में; क्रूरता को करुणा में परिवर्तित कर देता है।

हम विस्मित होते हैं।
हम तेरे उस चरनी में जन्म लिए जाने के साहसी निर्णय के बारे में सोचकर विस्मित होते हैं, जहां तूने निर्बलता की सामर्थ को प्रदर्शित किया।

जब हम तेरे न्याय और दया की उस बुलाहट के अनुसार जीते हैं, तो वे कार्य कठिन हो सकते हैं।
हम तेरे उस आश्चर्यजनक, भोलेपन (साधारण) और नम्रतापूर्वक जन्म का आदर करते हैं। आमीन।

—कैरन सुडैरमन द्वारा संकलित, वाईसेस टूगैदर रु896, राबर्ट मैकअफी ब्राउन, ऐनी लमोट, द ऐन्जलीकन बूक आफ कामन प्रेयर।

Preshit Rao

एमडब्ल्यूसी की 100वीं वर्षगांठ/शताब्दी समारोह में सींथीया पीकौक (सामने) द्वारा आशीष की प्रार्थना की गई। उन्होंने बंगाली भाषा में यह प्रार्थना की।

हमारी दुनिया में शांति के लिए प्रार्थना

आराधना के लिए एकत्रित होते हुए, हम एक समुदाय का निर्माण करने एवं सहभागिता स्थापित करने के कार्य के महत्व को समझ पाते हैं। यह हमें एक–दूसरे को अपने समुदाय का हिस्सा मानने के महत्व को स्मरण दिलाता है। हम यह भी समझते हैं कि हम एक बड़े विश्वासी परिवार का एक छोटा सा हिस्सा हैं जो एक साथ मिलकर एक वैश्विक समुदाय का निर्माण करता है। हम फिर से मिलकर मसीह के शरीर के अंग बन जाते हैं।

एक साथ मिलकर, हम यह भी जान पाते हैं कि हमारे विश्वासी परिवार के कई सदस्य - कुछ सड़क के उस पार रहते हैंय कुछ दुनिया के विभिन्न हिस्सों में - युद्ध, हिंसा और उत्पीड़न की वास्तविकताओं का अनुभव करते हैं। हम ऐसे देशों से आते हैं जो निरंतर युद्ध के कारण टूट चुके हैं। हम इस हिंसा और निराशा के दर्द से और इनके कारण टूट जाने से उबरने के लिए कड़ी मेहनत भी करते रहते हैं।

हम उन तरीकों को पहचान पाते हैं जिनसे हमारे वैश्विक समुदाय के कई लोग उत्पीड़ित और अमानवीय होने के बावजूद भी, परमेश्वर के योग्य संतान के रूप में अपने कोमल स्वभाव को प्रदर्शित कर पाते हैं।

हम युद्ध, हिंसा और उत्पीड़न को जानते हैं, अनुभव करते हैं और उनसे प्रभावित होते हैं।

और, जब हम शांति के राजकुमार, प्रभु यीशु मसीह में अपने एक समान विश्वास पर विचार करते हैं, तो हम जान पाते हैं कि युद्ध – और युद्ध की तैयारी - से शांति प्राप्त नहीं हो सकती।

- दूसरों को अकाल से मरने देने से शांति प्राप्त नहीं होगी।
- दूसरों पर बमबारी करने से शांति प्राप्त नहीं होगी।
- हत्या करने से शांति प्राप्त नहीं होगी।
- दूसरों से आर्थिक लाभ उठाने से शांति प्राप्त नहीं होगी।
- दीवारें खड़ी करने से शांति प्राप्त नहीं होगी।

युद्ध विनाश का कारण बनता है। यह हमारे जीवन और हमारे रिश्तों का नाश कर देता है, और समुदायों, देशों और लोगों की आशाओं और सपनों को तहस–नहस कर देता है।

हिंसा का जवाब हिंसा से देने से हम वैसे लोग बन जाते हैं जो हम नहीं बनना चाहते। हम जीवन के साक्षी बनना चाहते हैं, मृत्यु के नहीं। हम जख्मों को भरना चाहते हैं, जख्म देना नहीं चाहते। हम रिश्ते बनाना चाहते हैं और टूटे हुए लोगों को मिलाना चाहते हैं, और जिन लोगों के बीच हमारे मतभेद हो सकते हैं, उनके बीच में भी हम फूट और अलगाव पैदा नहीं करना चाहते हैं। हम शांति चाहते हैं, हिंसा और युद्ध नहीं।

हम स्वयं से और युद्ध की अग्रिम पंक्ति में तैनात अपने भाई–बहनों से आह्वान करते हैं कि वे अपने हाथों से हथियार छोड़ देने का साहसिक कदम उठाएं और फिर से उन्हें न उठाने की प्रतिज्ञा लें, ताकि वे अपने इन्हीं हाथों का, दूसरों को गले लगाने और दूसरों से स्वयं भी गले लगने के लिए उपयोग में ला सकें।

जब हम उन लोगों को देखते हैं जो सांस्कृतिक, राष्ट्रीय या वैचारिक बाधाओं के कारण हमसे भिन्न हैं – तो हम उनसे भी साहस के साथ प्रेम करने वाले हो सकें और उन्हें शत्रुओं के समान नहीं वरन् परमेश्वर के प्रिय संतान और संभाव्य मित्रों को समान देख सकें।

हम राजनीतिक सत्ता में बैठे लोगों से आह्वान करते हैं कि वे अपने दिल, दिमाग और कल्पनाओं को खोलें और कठोरता और हठ के बजाय रचनात्मकता का अभ्यास करें, और वर्चस्व और विभाजन के बजाय संवाद के माध्यम से मतभेदों को दूर करें। हम आपसे इस बात की मांग करते हैं कि आप स्वयं को और दूसरों को उस कैद से मुक्त करें जो इस तरह के अलगाव से पैदा होती है।

हम स्वयं से और अपने सभी भाई–बहनों से यह समझने के लिए आह्वान करते हैं कि राष्ट्रवादी विचारधारा और अलगाव, सुरक्षा और संरक्षण लाने में विफल रहते हैं। सुरक्षा और संरक्षण तभी संभव है जब हम अपने पड़ोसियों और अपने वैश्विक भाई–बहनों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करें। इसलिए हम दुनिया भर में पाए जाने वाले अपने सभी भाई–बहनों से दूसरों का अतिथि सत्कार करने का आह्वान करते हैं ताकि जीवन का विस्तार हो और अतिथि सत्कार प्राप्त करने वाले और अतिथि सत्कार प्रदान करने वाले, दोनों का जीवन समृद्ध हो। अतिथि सत्कार करना एक जीवनदायी भाव है।

आइए हम उस प्रकार की शांति, जो तभी संभवतः है जब हम एक–दूसरे का साथ देंने और एक दूसरे को गले लगाने, के कार्यों को करने वाले हों और स्वयं को समर्पित करने वाले बनें, ताकि न्याय और शांति का एक–दूसरे से मेल हो सकें, और इस तरह हम उन मूल कारणों को चुनौती दे सकें जिसके कारण लड़ाईयाँ आरंभ होती हैं! यही यीशु की जीवनदायी शांति है; यही मसीह की शांति है!

आइए हम अपने संसार में और संसार के लिए मसीह की शांति के मार्ग के साक्ष्य ठहरें।

—एंड्रयू जी. सुडरमैन, पीस कमीशन के सचिव हैं। वे हैरिसनबर्ग, वर्जीनिया, अमेरिका में रहते हैं।

मध्य पूर्व में युद्ध से संबंधित एक प्रचारक के लिए पत्र

प्रिय बहनों और भाइयों

मध्य पूर्व में युद्ध का बढ़ता प्रभाव आज दुनिया भर में हमारे ऐनाबैप्टिस्ट परिवार के लिए भय और शोक का स्रोत है। कुछ लोगों के लिए, यह एक नई वास्तविकता है, वरन् कुछ अन्य लोगों के लिए यह उनके स्थानीय संघर्षों के कारण जो हिंसा का बोझ, वे कई वर्षों या दशकों से उठा रहे हैं, उसे और भी अधिक बढ़ाते जा रहा है। हम उन सभी को देखते हैं जो शक्तिशाली लोगों के षड्यंत्रों के तहत कुचले जा रहे हैं; हम शोक मनाते हैं और उनके बीच परमेश्वर की दयाभरी उपस्थिति के लिए प्रार्थना करते हैं। हम परमेश्वर की इच्छा के अनुसार युद्ध के किसी भी समर्थन की निंदा करते हैं।

हम अपनी प्रार्थनाओं से यह आग्रह करते हैं कि वे हमें कार्यों को करने के लिए प्रेरित करें। और हम अपने कार्यों को अपनी प्रार्थनाएँ बनाना चाहते हैं।

हमारी निष्ठा राष्ट्रपतियों या राजाओं के प्रति नहीं, बल्कि शांति के राजकुमार के प्रति है। एक ऐतिहासिक शांतिपूर्ण कलिसिया के सदस्य होने के नाते अर्थात, शांति के मार्गों के लिए समर्पित एक कलिसिया के रूप में, हम शांति के राजकुमार, यीशु का अनुसरण करते हैं, जो हमें शत्रुओं से भी प्रेम करने के लिए कहते हैं।

यह प्रेम हमारे हृदयों को "अन्य" मनुष्यों में परमेश्वर को देखने के लिए प्रशिक्षित करता है, चाहे वह शत्रु हो या मित्र।

यह प्रेम हमें न्याय की मांग करने का साहस देता है।

यह प्रेम हमें पारस्परिक रूप से, संगठनों के स्तर पर, राज्यों और लोगों के बीच, तथा शेष सृष्टि के साथ सही संबंध बनाने के लिए कहता है, जो सभी संघर्षों के कारण नुकसान उठाते हैं।

मसीह के प्रेम की सामर्थ हमें राष्ट्रों या वैचारिक शुद्धता की रक्षा करने वाले अभिमान की ओर नहीं, बल्कि उन लोगों के प्रति करुणा दिखाने की ओर प्रेरित करती है जो पीड़ित पाए जाते हैं – चाहे उनकी राष्ट्रीय पहचान या राजनीतिक संबद्धता कुछ भी क्यों न हो।

प्रभु यीशु की शिक्षाएँ हमें यह स्मरण दिलाती हैं कि शत्रु कोई दूसरा व्यक्ति नहीं, बल्कि अवरोध उत्पन्न करने और स्वयं शत्रुता का शिकार होने की हमारी अपनी प्रवृत्ति है। हम प्रार्थना करते हैं कि जैसे–जैसे हम प्रेम करने का साहस प्राप्त करेंगे, परमेश्वर की परिवर्तित करने वाली सामर्थ, हिंसा के उस चक्र को तोड़ देगी जो विभाजन, दमन और हत्या का कारण बनता है।

न्याय के साथ शांति भी होनी चाहिए। वास्तव में, शांति तभी संभव है जब पुनर्स्थापनात्मक, सत्य–साधक और सुधार–उन्मुख न्याय प्रदर्शित किए जाएं। हम न्यायपूर्ण शांति की खोज में अपनी असफलता को स्वीकार करते हैं। हम पवित्र आत्मा से प्रार्थना करते हैं कि वह हमें विनम्रता सिखाए और प्रेम करने का साहस प्रदान करे। हम भविष्यवाणी की स्पष्टता और आत्म–त्याग करने वाले प्रेम के साथ सत्य को पहचानने और बोलने की बुद्धि माँगते हैं। हम स्वयं को जोखिम में डालकर अन्याय का सामना करने का साहस माँगते हैं।

हम सरकारों या साथी नागरिकों के समक्ष, जारी हिंसा और मौत के स्रोतों को दिए जा रहे अविवेकी समर्थन के बारे में आवाज उठाने का संकल्प लेते हैं।

एक वैश्विक ऐनाबैप्टिस्ट समुदाय के रूप में, हम हिंसा का त्याग करते हैं, जैसे प्रभु यीशु ने किया। हम यीशु के अनुयायियों के रूप में, सक्रिय अहिंसा के माध्यम से अन्यायपूर्ण व्यवस्थाओं को बदलने के लिए प्रतिबद्ध हैं। हम राष्ट्रों से आह्वान करते हैं कि वे युद्ध में निवेश करना बंद करें और इसके बजाय शांति के मार्ग को खोजने का कठिन प्रयास करना आरंभ करें, एक ऐसी शांति जो बंदूकों, मिसाइलों या हिंसक बल से प्राप्त नहीं होती – ताकि सभों का विकास हो सके।

संकट के सामने हमारे शब्द छोटे और अपर्याप्त लगते हैं, फिर भी हम अपने इस विश्वास की पुनः पुष्टि करते हैं कि

"प्रभु यीशु की आत्मा हमें जीवन के सभी क्षेत्रों में परमेश्वर पर भरोसा करने की शक्ति देती है, ताकि हम शांति स्थापित करने वाले बनें, जो हिंसा का त्याग करते हैं, अपने शत्रुओं से प्रेम करते हैं, न्याय चाहते हैं, और अपनी संपत्ति जरूरतमंदों के साथ साझा करते हैं।" (साझा विश्वास 5)

हे प्रभु, अपनी दया से हमारी प्रार्थना सुनिए।
शांति के राजकुमार, यीशु के नाम से इस प्रार्थना को हम मांगते हैं,
हेंक स्टेनवर्स
अध्यक्ष, एमडब्ल्यूसी

आशीष वचन

इन समयों के लिए आशीष

इंतजार के इस कार्य में
    परमेश्वर आपको आनंद दे
हैरान कर देने वाले अनुग्रह में
    परमेश्वर तुम्हें उठाकर ले चले
इन कठिन कार्यों में
    परमेश्वर तुम्हें शांति दे।
परमेश्वर के आश्चर्यजनक, भोले (साधारण), नम्रतापूर्वक प्रेम को पहनकर,
विदा हो।

शिक्षण के लिए संसाधन

हमारे करीबी संबंधों का नए सीरे से बनाया जाना

मत्ती 22:34–40 पर आधारित संदेश

एनड्रेस पचेको लोजानो

"वैसीनो" या "वैसीना" (पड़ोसी)। यह एक प्रकार का तरीका है जिससे हम बोगोता (कोलम्बिया) के लोग, अपने आस पास पाए जाने वाले लोगों को, चाहे वे हमारे बिल्डिंग में रहते हों, या हमारे घर के बाजू में रहते हों, या जब हम उनसे किसी दुकान में या सार्वजनिक जगहों पर मिलें तो हम उन्हें इस शब्द से संबोधित करते हैं। यह भी हो सकता है की हमारी उनसे अच्छी जान पहिचान हो, या शायद हम उनके नाम को भी न जानते हों, फिर भी जब हम उन्हें "पड़ोसी" कहकर बुलाते हैं तो हमारे बीच का संबंध उसी वक्त और भी अधिक घनिष्ट हो जाता है। जब हम किसी अन्य व्यक्ति से मिलते हैं, तो यह तरिका, हमारे बीच की दूरीयों को, परायापन को और यहां तक की हमें हमारे संघर्षों से भी ऊपर उठा देता है।

Andrew Bodden

कुस्को, पेरू में, एमडब्ल्यूसी की एक सदस्य कलिसिया, इग्लेसिया इवेंजेलिका मेनोनिटा डेल पेरू ने "सेलिब्र, इक्विपर, एडोरर" जो एनाबैप्टिज्म के 500 साल पूरे होने के उत्सव को 18–22 जनवरी 2025 को आयोजित किया।

पड़ोसी शब्द करीबी संबंधों (नजदीकता) को दर्शाता है। अंग्रेजी में इस शब्द का प्रयोग मत्ती 22:34–40 में किया गया है। स्पैनीश और फ्रेंच भाषा में, "प्रोजीमो" (निकटस्थ/करीबी इंसान) के लिए बाइबल के भाग में अधिकतर इस शब्द का उपयोग किया गया है। यद्यपि "प्रोजीमो" या "प्रोजीमा" शब्द, प्रोक्जीमेट (निकटस्थ/करीबी) के विचार से प्राप्त किया गया है, जिसका अर्थ निकट रहना या बाजू में होना होता है, और यह आज के समय में दैनिक जीवन के उपयोग के लिए काफी अधिक काल्पनिक और अलग किया गया शब्द है। हम अक्सर बाइबल के किसी भाग का उल्लेख करने के लिए या हमारे मसीही विश्वास के किसी नैतिक अर्थों को विशिष्ट रूपसे समझाने के लिए प्रोजीमो/प्रोजीमा शब्द का उपयोग करते हैं। हम अक्सर इसका उस समय प्रयोग नहीं करते जब हम उन लोगों के बारे में बातें करना चाहते हैं जिनसे हम रोज मिलते हैं।

क्या होगा जब हम निकटता, गर्मजोशी और दूसरे लोगों की दैनिकता को महत्व देने लगेंगे, जैसा हम बोगोता में उन्हें "पड़ोसी" कहकर संबोधित करते हुए देते हैं? हम बाइबल के इस भाग को तब किस प्रकार पढ़ पाएंगे?

मत्ती का यह भाग काफी प्रसिद्ध है और स्पष्ट और सटीक जान पड़ता है। फिर भी, यीशु मसीह के द्वारा कही गई बातों के कई विभिन्न दृष्टिकोण और अर्थों को महत्व देना संभव है।

हम अपने विश्वासी स्वभाव के "ऊपर से नीचे" (लंबे) और "एक छोर से दूसरे छोर" (चौड़े) के बीच के संबंध को विशिष्ट रूप से; अर्थात् परमेश्वर का प्रेम हम में पाए जाने और हमारा दूसरे मनुष्यों से प्रेम करने के बीच के संबंध से दर्शा सकते हैं । रीचार्ड बी. गार्डनर(1991) मत्ती के इस भाग का अपने बाइबल टीका में यह तर्क देते हैं कि यह नियम अनिवार्य रूप से नए हैं। परमेश्वर से अपने सारे मन, अपने सारे प्राण, और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रखने की बात को हम व्यवस्थाविवरण 6:5 में पाते हैं। हम इस विचार को कि हम उनसे प्रेम करें जो हमारे करीबी हैं, लैव्यवस्था 19:18 (गार्डनर,1991, च. 425) में पाते हैं। इन दोनों आज्ञाओं के बीच की परस्पर निर्भरता, यहाँ यीशु मसीह की प्रतिक्रिया को भिन्न बनाती है। हमारे विश्वास के लंबे और चौड़े परिमाणों को अलग करना असंभव है।

हम जिन बातों पर विश्वास रखते हैं और हम अपने जीवन को जिस प्रकार से जीते हैं, इन दोनों के बीच के संबंध से हम जिन बातों को समझ पाते हैं, यह भी इस व्याख्या का एक दूसरा दृष्टिकोण हो सकता है। अगर हम अपने पड़ोसियों के दुख के प्रति बेपरवाही से पेश आते हों तो यह कहना अनुचित होगा की हम परमेश्वर से प्रेम करते हैं।

यह कहना भी उतना ही अतार्किक होगा की हम शांति और न्याय के अपने परमेश्वर पर विश्वास रखते हैं अगर हम अन्य लोगों के प्रति कठोर और अनुचित रीति से कार्य कर रहे हों। वास्तव में, गार्डनर (1991) का प्रस्ताव यह है कि इस भाग से हम जिन निष्कर्षों को निकाल सकते हैं, उनमें से एक यह भी है कि हम अपने पड़ोसी से प्रेम करने के कार्य को करते हुए, पूरे संसार के प्रति परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित कर सकते हैं। प्रभु यीशु मसीह का देहधारी होना, इस संसार के प्रति परमेश्वर के प्रेम को प्रकट करता है।

साथ ही, मनुष्य होने के नाते हमें भी दूसरों से और शेष सारी सृष्टि से प्रेम करते हुए, परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए बुलाया गया है। हमारे आस–पास पाए जाने वाले वे लोग, विशेषकर जो अधिकारहीन कर दिए गए हैं, उनके प्रति हमारा चालचलन ही, परमेश्वर के लिए हमारे प्रेम की गवाही देता है। इसीलिए, हम अपने विश्वास के बारे में जिन बातों को समझते हैं और उसे जिस प्रकार से हम जीते हैं, उसमें अंतर नहीं कर सकते।

मत्ती 22 में प्रभु यीशु मसीह के द्वारा दिया गया उत्तर, संपूर्ण बाइबल को समझने की कुंजी की तरह भी काम कर सकता है। उनका उत्तर एक ऐसा लेंस है जो हमें उन ग्रंथों, नियमों और आज्ञाओं के अर्थ को समझने में सहायता करता है जो कभी–कभी अस्पष्ट या परस्पर विरोधी प्रतीत होते हैं। गार्डनर (1991) बताते हैं कि दूसरी शताब्दी की रब्बी विद्या के अनुसार, तोरा में लगभग 613 नियम (365 निषेध और 248 आज्ञाएँ) हैं (पृष्ठ 425)। जब प्रभु यीशु, परमेश्वर के प्रेम और अपने पड़ोसियों के प्रेम को दो सबसे महत्वपूर्ण आज्ञाओं के रूप में प्रस्तुत करते हैं, तो वे अन्य सभी नियमों को इनके अधीन करते हुए यह अपेक्षा करते हैं कि हम उन्हें प्रेमी परमेश्वर के और पड़ोसी के लेंस से ही पढ़ें।

यदि ये अवलोकन मूल्यवान हैं, तो मत्ती 22:34–40 का यह भाग एक ऐसा पाठ है जिसकी व्याख्याएँ अनंत हैं। हमारी इस दुनिया को इस बात की निरंतर पुनर्व्याख्या करने की आवश्यकता है कि यह पाठ परमेश्वर और अपने पड़ोसी से प्रेम करने के बारे में क्या कहना चाहता है। यह विशेष रूप से जलवायु आपातकाल में, सरकारी चुनावों, विदेशी–स्वदेशी भावनाओं के पुनः प्रकट होने, हमारे समाजों में हिंसा, युद्धों और नरसंहार के समयों में, जो ऐसी वास्तविकताएँ बन गई हैं जिनका हमें हर दिन सामना करना पड़ता है, में सच साबित होता है।

शर्म आनी चाहिए पड़ोसी! शर्म आनी चाहिए पड़ोसी!

बोगोटा में लोगों को "पड़ोसी" कहकर संबोधित करने की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए, हम अक्सर कहते हैं, "क्या पेना, कितने अफसोस की बात है, पड ़ोसी" जब हमें सहायता की जरूरत होती है या जब हम किसी चीज के लिए माफी मांगना चाहते हैं।

हम एक ऐसी दुनिया में रह रहें हैं जहाँ हमारे करीबी रिश्ते बुरी तरह से वि कृत और क्षतिग्रस्त हो चुके हैं। और अक्सर, हम इस नुकसान के भागीदार रहे हैं। इसलिए हमें ध्यान से इस बात का आकलन करना चाहिए कि हमने अपने करीबी जनों और पड़ोसियों को किस तरह नुकसान पहुँचाया है। शायद हमें उनसे, मुझे माफ करना, पड़ोसी। मुझे माफ करना, पड़ोसी। कहकर अपनी गलतियों की माफी मांगने की जरूरत है।

हम जिन समयों में जी रहे हैं, हमारे लिए हमारे आस–पास रहने वाले लोगों पर शक करना, एक आम बात लगने लगी हैं, शायद इसलिए कि वे कुछ अलग प्रकार की सोच रखते होंगें, या इसलिए कि वे प्रवासी, विस्थापित या अधिकारहीन लोग होंगें। हमें इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारे आस–पास के लोग स्थानीय हैं या किसी दूसरी जगह, देश या इलाके से आए हुए हैं, क्योंकि हम उन सभी को अपने पड़ोसी के बजाय अजनबी, दुश्मन, और यहाँ तक की दुश्मन और अपराधी ही मान लेते हैं। हमारे इतिहास और वर्तमान की दुनिया में कितने ही युद्ध पड़ोसी देशों के बीच हुए हैं!

प्रकृति के साथ भी हमारे पड़ोसी संबंधों पर गहरा असर पड़ा है। हमने अपने परस्पर–निर्भर संबंधों को उन पर प्रभुता करने और उनका नियंत्रण करने के संबंधों में बदल दिया है। हम प्रकृति को एक ऐसे संसाधन के रूप में देखते हैं जिसका हम आसानी से शोषण कर सकते हैं और उसका लाभ उठा सकते हैं। जलवायु परिवर्तन उस क्षति का एक संकेत है जिसे हम मनुष्य जाति के रूप में प्रभावित कर चुके है और अभी भी कर रहे हैं। हमारा संबंध, हमारे महत्वपूर्ण स्थान अर्थात पृथ्वी और जल के साथ घातक रूप से घायल हो गया है।

Henk Stenvers

भारी बारिश के बाद पेरू के पिउरा की सड़कों पर बाढ़।
जलवायु परिवर्तन हमें अपने पड़ोसियों से प्रेम करने का आह्वान करता है।

परदोन वेसीना, परदोन वेसीना... (क्षमा करें पड़ोसी, क्षमा करें पड़ोसी...)

इन सभी परस्पर विरोधी वास्तविकताओं के बीच, फरीसियों द्वारा यीशु से पूछा गया यह प्रश्न की सबसे बड़ी आज्ञा कौन सी है, एक विशेष महत्वत्ता को दर्शाता है। इन विकृतियों से निपटने के लिए हम अपने विश्वास के लिए मार्गदर्शन और संदर्भ बिंदुओं को कैसे प्राप्त कर सकते हैं? हमें किन नियमों का पालन करना चाहिए? अगर सरकारें, राजनेता और आर्थिक शक्तियाँ अंतर्राष्ट्रीय कानून और मानवाधिकारों जैसे मानवता के कानूनी ढाँचों को बिना किसी दंड के अनदेखी करती हैं, तो हमें क्या करना चाहिए? जब वर्तमान की सरकारें, पर्यावरण पर हमारे प्रभाव को सीमित करने के लिए हमारे द्वारा उठाए गए कदमों को पलट दें, तो हम क्या कर सकते हैं?

जैसे जब प्रभु यीशु मसीह इस पृथ्वी पर थे, तब दुविधा केवल यह नहीं थी की हजारों कानून और नैतिक ढाँचे पाए जाते हैं। दुविधा इसलिए और भी बढ़ जाती है क्योंकि उत्पीड़न और हिंसा के कारण यह अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है कि हम संदर्भ बिंदु खोजें और अपने विश्वास के मूल सिद्धांतों से फिर से जुड़ सकें ताकि हम समझ सकें कि हमें कैसे कार्य करना चाहिए।

"यूनस डियास वेसीना", "ब्यूनस डियास वेसीनो"। ("सुप्रभात पड़ोसी", "सुप्रभात पड़ोसी"।)

जब मैं उन लोगों से बातें करता हूं जो बोगोटा (कोलंबिया) कभी नहीं गए हैं या वहां कभी नहीं रहे हैं, तो मैं अक्सर उन्हें यह बताता हूं कि हम एक–दूसरे का अभिवादन,"बुएनास डायस सलुडा" या "बुएनास डायस नेबर" (सुप्रभात, पड़ोसी) कहकर करते हैं। इसे समझाने में कि यह कैसा सुनाई देता है और इसका अर्थ क्या होता है, आमतौर पर कुछ मिनट (और उदाहरण) ही लगते हैं। इस बात को समझाने के लिए कि हम किसी दूसरे व्यक्ति को, भले ही वह हमारे पड़ोस में रहता हो या नहीं रहता हो, फिर भी उसे संबोधित करने के लिए "पड़ोसी" शब्द का उपयोग करते हैं, उनकी मुस्कुराहटों के बीच, मुझे कभी यह जान नहीं पड़ता की मैंने ठीक से उस काम को किया है या नहीं।

हर बार जब मैं परमेश्वर और अपने आस–पास के लोगों से प्रेम करने के बारे में यह पाठ पढ़ता हूँ, जिसमें स्पेनिश में "प्रोजिमो" शब्द पर जोर दिया गया है, तो मैं सचेत रूप से पड़ोसी शब्द के साथ–साथ बोगोटा में जो हम रोजाना "पड़ोसी" शब्द का उपयोग जिस प्रकार से करते हैं, उनके बीच के संभावित बारीकियों पर विचार करने की कोशिश करता हूँ। इससे तात्पर्य यह है कि, प्रभु यीशु हमें अपने करीबी रिश्तों पर पुनर्विचार करने के लिए आव्हान करते हैं।

Comunidad Cristiana Menonita de Girardot

कोमुनिदाद क्रिस्टियाना मेनोनिटा डी गिरारडोट, कोलंबिया के सदस्य, पैन वाई पाज "रोटी और शांति रविवार" के अवसर पर अपने पड़ोसियों – प्रोजिमो और वेसिनो – के साथ अपने ब्रेड (रोटी) को बांटते हुए।

यह एक प्रकार से सांस्कृतिक विरोध का कार्य हो सकता है जब आसपास के लोगों को पड़ोसियों की तरह माना जाए, जहां दृश्य और अदृश्य बाधाएँ हमें अलग करती हैं; जहां हमारे समुदायों और देशों की समस्याओं के लिए अधिकारहीन समूहों को बलि का बकरा बनाना आम बात हो; जहां हमें दूसरे व्यक्ति को अपना दुश्मन समझने के लिए प्रेरित किया जाता हो। परंतु जब हम पड़ोसी की तरह एक दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं, तो हम यथास्थिति के विरुद्ध जाते हैं।

शायद किसी को "पड़ोसी" कहना ऊपरी लगे, या एक सामाजिक संकेत शब्द लगे, या सिर्फ एक मामूली शब्द लगे जिसे हम बोगोटा में उपयोग में लाते हैं। लेकिन, जब हम किसी दूसरे व्यक्ति को पड़ोसी कहकर बुलाते हैं, तो हम एक घनिष्ठ संबंध का निर्माण करते हैं, एक ऐसा संबंध जिसका अस्तित्व पहले न रहा हो। और फिर यह संबंध उन्हें अजनबी या दुश्मन समझना मुश्किल बना देता है।

जो दूसरों के साथ हमारे दूर के और करीबी रिश्ते होते हैं, वे कभी स्थिर या कठोर नहीं होते; वे बदल सकते हैं और आश्चर्यजनक तरीकों से विकसित हो सकते हैं। यहाँ तक की जो लोग स्वयं को अजनबी या दुश्मन समझते हों, वे भी पड़ोसी बन सकते हैं। दयालु सामरी के दृष्टांत (लूका 10:25–37) में, यीशु मसीह हमें यह दर्शाते हुए कि हमारा पड़ोसी कौन है, बहुत ही अच्छी तरह से समझाते हैं। प्रभु यीशु के समय में सामरियों और यहूदियों के बीच एक असहज रिश्ता था। फिर भी प्रभु यीशु, इस तथ्य को जानने के बावजूद कि यहूदी, उस सामरी को अजनबी और यहाँ तक की दुश्मन भी मानते हों, उस सामरी व्यक्ति में एक पड़ोसी के शानदार उदाहरण को प्राप्त कर पाते हैं।

मेरा मानना है कि प्रभु यीशु के द्वारा दिया गया उत्तर, हमें ठीक इसी रीति से आव्हान करता है: हमें अपने प्रेमी और करीबी रिश्तों को नए सिरे से परिभाषित करना होगा। हमें हमेशा ऐसे और भी लोग मिलेंगे जिन्हें हम अपना पड़ोसी कहकर संबोधित कर सकते हैं। अगर हम इस विचार पर अड़े रहते हैं कि अपने पड़ोसी से प्रेम करना ही परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम को प्रकट करने का तरीका है, तो हमें इस प्रेम को जीने और व्यक्त करने के तरीके को हमेशा समृद्ध और पोषित करना चाहिए। चाहे यह कितना भी जटिल क्यों न जान पड़े, हर नया दिन, नया संदर्भ, नई वास्तविकता यह है कि हम अपने आस–पास के लोगों के साथ परमेश्वर के प्रेम को प्रदर्शित कर सकते हैं।

¿एन क्वे ले पुएडो अयुदर वेसीना? ¿एन क्वे ले पुएडो अयुदर वेसीना?
(क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूं, पड़ोसी?)

बोगोटा में, दुकानदार अक्सर अपनी दुकान में कुछ खरीदने आए लोगों से पूछते हैं, "पड़ोसी, क्या मैं आपकी सहायता कर सकता हूं?" इस प्रश्न में मुझे जो बात सबसे ज्यादा प्रभावित करती है, वह यह है कि वे हमें सिर्फ पड़ोसी कहकर नहीं बुलाते, वरन् हमारी सहायता भी करते हैं। इस संसार मे रहते हुए, ऐसी कई बातें जो संसार के अन्य लोग या हमारे पड़ोसियों के साथ घटित होती है, उन्हें देखकर हमें बुरा लग सकता है। लेकिन हम दूर से ही उनकी स्थिति के प्रति सहानुभूति रखना चाहते हैं, ताकि वह हमारे सुख सुविधा में बाधा न डाल सकें।

अगर हम यह मान लें कि अपने पड़ोसी से प्रेम करने से ही हम परमेश्वर के प्रति हमारे प्रेम को व्यक्त और प्रदर्शित कर सकते हैं, तो अपने पड़ोसी से प्रेम करने की यह बुलाहट, इस बात की भी बुलाहट ठहरती है कि हम एकजुटता से कार्यों को करें, और जिन कार्यों को उनके प्रति करना हो और किन तरीकों से उनकी सहायता करनी हो, उन्हें अच्छे से समझ लें। अपने पड़ोसियों से प्रेम करना केवल शब्दों तक सीमित नहीं होता है, इसे करके दिखाना भी होता है। इसका अर्थ किसी समस्या का उत्तर पाना या

उसका समाधान करना भी नहीं है। न ही हम किसी दूसरे व्यक्ति के लिए यह निर्णय ले सकते हैं कि उसे क्या करना चाहिए और क्या नहीं। एकजुटता से कार्य करने का अर्थ यह है कि हम दूसरों के साथ साथ चलने का संकल्प लें, उनकी बातों को सुनें और उनके प्रति जिन कार्यों को करना है उन्हें समझें; यह सिर्फ इंस्टाग्राम पर किसी पोस्ट को लाइक करने या टिकटॉक पर वीडियो शेयर करने से कई ज्यादा बढ़कर है।

कभी–कभी हम सक्रियता के माध्यम से और अहिंसक प्रदर्शनों और जुलूसों में भाग लेकर एकजुटता व्यक्त करते हैं। बाकी समय, हम अपने विशेषाधिकारों को पहचानकर और उनका सामना करके, और कई लोगों व समुदायों के संघर्षों में सहयोगी बनकर एकजुटता व्यक्त करते हैं। एकजुटता का यह भी अर्थ हो सकता है कि हम हिंसा के विभिन्न रूपों का जिससे कई लोग बुरी तरह से प्रभावित हुए है, उसका सामना करने के लिए अपने लिए एक सुरक्षित और साहसी स्थान ढूँढें और बनायें। इसका आशय एकजुटता के सभी रूपों की एक लंबी सूची बनाने का नहीं है; ये तो बस इस बात का संकेत हैं कि एकजुटता का अर्थ सिर्फ कुछ शब्दों और सहानुभूति से बढ़कर है।

पड़ोसी होने का तात्पर्य, कई जिम्मेदारियाँ और सावधानियाँ की शृंखला भी हैं। कई बार ऐसा होता है कि हिंसा हमारे सबसे करीबी रिश्तों में सबसे अधिक तीव्रता से प्रकट होती है। हम हिंसा के इन रूपों के बारे में शायद ही कभी बात करते हैं और अक्सर उन आवाजों को दबाने की कोशिश करते हैं जो इन्हें सामने लाती हैं। लिंग आधारित हिंसा, यौन हिंसा, पारिवारिक हिंसा जिसे हम घरेलू हिंसा भी कहते हैं, आदि, यह दर्शाते हैं कि करीबी होने से या घनिष्ट संबंध होने से यह जरूरी नहीं है कि हमारे रिश्ते हमेशा भले और उचित ही होंगे। हिंसा का पाप और उससे होने वाला गंभीर नुकसान, घनिष्ट संबंधों में भी प्रकट हो सकता है। अपने पड़ोसियों से प्रेम करने को, परमेश्वर से प्रेम करने की अभिव्यक्ति मानना, हमें हमारी उस बड़ी जिम्मेदारी को स्मरण दिलाता है कि हमें दूसरों की उन्नति के लिए उनकी सहायता करनी है।

दूसरे शब्दों में, सिर्फ किसी दूसरे व्यक्ति को अपना पड़ोसी मानना ही उसके प्रति हमारे स्नेह को व्यक्त करने का एक तरीका नहीं है, बल्कि हमें उनके भले का ध्यान रखने के लिए, उस जिम्मेदारी को उठाने के लिए प्रतिबद्ध होने की आवश्यकता है।

अतः, हम अपने पड़ोसी या अपने करीबी व्यक्ति से प्रेम करने के द्वारा ही परमेश्वर के प्रति अपने प्रेम को प्रदर्शित करते हैं।

ऐनाबैप्टिज्म के 500 साल पूरे होने का उत्सव मनाते हुए, और इस महत्वपूर्ण अवसर के लिए चुने गए विषय: प्रेम करने का साहस, पर चिंतन करते हुए, यह अत्यंत महत्वपूर्ण होगा कि हम आज के समय में, परमेश्वर और पड़ोसी से प्रेम करने से संबंधित उसके अर्थ और जिम्मेदारियों पर फिर से ध्यान दें।

ऐसी दुनिया में जहाँ मृत्यु और निराशा प्रबल हो चुके हैं, वहाँ प्रभु यीशु की वाणी हमें यह स्मरण दिलाए कि हम जिन भी बातों को समझते हैं और जिस तरह से हम अपने विश्वास को जीते हैं, उसका केंद्र यीशु मसीह ही होना चाहिए।

यह एक ऐसा समय हो जिसमें हम यह सोचें कि हमारा पड़ोसी कौन है और उनके साथ वैसा ही व्यवहार भी करें।

यह एक ऐसा समय हो जिसमें हम प्रेम करने के साहस को अपना पाएँ, और दूसरे लोगों के साथ चाहे वे हमें विचित्र या असाध्य क्यों न जान पड़ें, उनके साथ नए संबंध और करीबी रिश्तों को बनाएँ।

यह एक नई शुरुआत का समय भी हो, ताकि हम दूसरों के साथ एकजुटता से काम करने के लिए नई प्रतिबद्धताएँ बना सकें, क्योंकि हम सब मिलकर भलाई की खोज करते हैं।

और हमारे प्रेम के परमेश्वर, जो हमसे असीम प्रेम करते हैं और हमें दूसरों और हमारी दुनिया के साथ अपने रिश्तों के माध्यम से उस प्रेम का परस्पर आदान प्रदान करने के लिए आव्हान करते हैं, हमें इस मार्ग पर चलने के लिए आव्हान करते रहें और हमारा मार्गदर्शन भी करते रहें।

आमीन।

—आंद्रेस पाचेको लोजानो पीस कमीशन के अध्यक्ष हैं। मूल रूप से वे कोलंबिया के निवासी हैं, और अभी वे नीदरलैंड के एम्स्टर्डम में रहते हैं। यह संसाधन कोलंबिया के बोगोटा में इग्लेसिया क्रिस्टियाना मेनोनिटा डी टेउसाक्विलो में उनके द्वारा दिए गए एक उपदेश से लिया गया है।

Irma Sulistyorini

याब्स के प्रतिनिधि, मई 2025 में, जर्मनी में आयोजित प्रतिनिधियों के राष्ट्रीय सदस्य सम्मेलन के दौरान अपनी सभाओं के अंत में अपने अपने देशों के झंडों को प्रदर्शित करते हुए।

[1] Gardner, Richard B. (1991). *Believers Church Bible Commentary: Matthew.* Herald Press.

[2] Gardner, 1991, p. 425.

[3] Ibid., 430.

[4] Ibid., 425.

गवाही

एक शांतिपूर्ण कलिसिया होने का क्या अर्थ होता है?

Amos Chin

आमोस चीन, बाइबल मिशनरी चर्च के अध्यक्ष, सूसू लीन इन को म्यांमार में बपतिस्मा देते हुए।

म्यांमार की एक कलिसिया की कहानी

एक ऐतिहासिक शांतिपूर्ण कलिसिया होने का – या एक ऐसी कलिसिया जो मसीह की शांति के मार्ग के प्रति समर्पित रहे, का क्या अर्थ होता है?

म्यांमार में, लड़ाईओं के कारण, उस देश के कई लोग प्रभावित हो रहें हैं और इन समयों में यह प्रश्न है जिससे म्यांमार की मेनोनाईट कलिसिया जूझ रही है।

कई वर्षों पहले, वहाँ के सैन्य शासन ने लोकतंत्र द्वारा चुनी गई सरकार को हरा दिया, और उसके पश्चात् एक सेना द्वारा नियुक्त किए गए राष्ट्रपति और उनकी व्यवस्था को अधिकृत कर दिया। मानव अधिकारों का उल्लंघन बढ़ता गया, खासकर तब जब नई सैन्य समर्थित सरकार (जुंटा) किसी भी असहमति पर नकेल कस रही थी, और सभी विपक्ष को खत्म करने की कोशिश कर रही थी। इसके परिणामस्वरूप बड़े पैमाने पर हमले और हत्याएं हुई हैं, लोगों को मनमाने ढंग से हिरासत में लिया गया है, और लोगों को उनके घरों से विस्थापित किया गया है, अभिव्यक्ति और/या एकत्र होने की स्वतंत्रता पर अंकुश लगाया गया है। इसके कारण आराधना करने के लिए और अन्य कार्यों के लिए लोगों के समूह को इकट्ठा होने को लेकर चिंता बढ़ गई है। जुंटा ने अनिवार्य सैन्य सेवा भी लागू कर दी है।

इस संदर्भ में कलीसिया की क्या भूमिका है? इन वास्तविकताओं के बीच मसीह की शांति के मार्ग के प्रति समर्पित होने का क्या अर्थ है?

युद्ध के बीच में एक शांतिपूर्ण कलिसिया

यह वे प्रश्न हैं जो म्यांमार में बाइबल मिशनरी चर्च, मेनोनाइट (बीएमसी) के सदस्य पूछ रहे हैं।

बीएमसी ने मेनोनाइट वर्ल्ड कॉन्फ्रेंस (एमडब्ल्यूसी) से, जिसका वह सदस्य है, संपर्क करके उनसे सहायता मांगी। वे यह जानने के लिए उत्सुक थे कि क्या यह संभव होगा कि एमडब्ल्यूसी इन सवालों पर मिलकर विचार करने के लिए एक प्रतिनिधिमंडल को एकजुटता यात्रा पर भेज सकेगी।

25–29 नवंबर 2024 को, एमडब्ल्यूसी का एक प्रतिनिधिमंडल म्यांमार के हमारे भाई–बहनों के साथ समय बिताने के लिए थाईलैंड पहुँचा। यह निर्णय लिया गया कि थाईलैंड में मिलना ज्यादा बेहतर होगा क्योंकि म्यांमार में मुलाकात करना, वहाँ के अगुवों के लिए जोखिम भरा हो सकता है। (जुंटा इस बात पर पूरा ध्यान देता है कि कौन किसके साथ मिल रहा है। इस प्रतिनिधिमंडल में एमडब्ल्यूसी के महासचिव सीजर गार्सिया (कोलंबिया); डीकन्स कमीशन की सचिव टिगिस्ट टेस्फे (इथियोपिया); पीस (शांति) कमीशन के अध्यक्ष आंद्रेस पाचेको लोजानो (कोलंबिया/नीदरलैंड); पीस कमीशन के सचिव एंड्रयू सुडरमैन (कनाडा/अमेरिका); और दक्षिण–पूर्व एशिया के लिए एमडब्ल्यूसी के क्षेत्रीय प्रतिनिधि अगुस मायंतो (इंडोनेशिया) शामिल थे। नॉर्म डाइक (एमसी कनाडा) भी इस प्रतिनिधिमंडल के एक सदस्य थे क्योंकि एमसी कनाडा का म्यांमार के मेनोनाइट चर्च के साथ पुराना संबंध रहा है।

ऐनाबैप्टिस्ट आंदोलन की उत्पत्ति और इतिहास

बीएमसी के अगुवों ने ऐनाबैप्टिस्ट आंदोलन की उत्पत्ति और इतिहास के बारे में और अधिक जानकारी के लिए कुछ समय माँगा। सीजर गार्सिया हर सुबह इन सत्रों में अगुवाई करते थे।

प्रचारक लोग यह भी जानना चाहते थे कि पवित्रशास्त्र बाइबल, शांति के बारे में क्या सिखाती है। एंड्रेस पाचेको लोजानो और एंड्रयू सुडरमैन ने सुबह और दोपहर के समय बाइबल की कहानी और उसके शांति व न्याय से जुड़ाव को आसानी से समझने के लिए उनकी सहायता की। उस समय का कुछ भाग इस बात पर विचार करने में बिताया गया कि हमारे म्यांमार के भाई–बहन, बाइबल के दृष्टिकोण से शांति के बारे में क्या विचार रखते हैं और म्यांमार के संदर्भ में इसका क्या अर्थ हो सकता है।

एन्ड्रेस पाचेको लोजानो और एंड्रयू सुडरमैन ने अन्य कलिसियाओं से संबंधित कहानियों को और शांति एवं न्याय के लिए उनके संघर्षों की कहानियों को भी साझा किया, उदाहरण के लिए, कोलंबिया और दक्षिण कोरिया में मेनोनाइट चर्च और साथ ही अन्य संघर्षों के बारे में, (जैसे, दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद)।

टिगिस्ट टेसफे ने उपस्थित प्रत्येक अगुवों के लिए और जिन मण्डलियों में वे सेवा करते हैं, उनके लिए प्रार्थना करने में अगुवाई किया।

यह एक कठिन, फिर भी अद्भुत समय था जिसे साथ में बिताया गया।

शालोम के दर्शन

यह कठिन था क्योंकि वहाँ उपस्थित पूरा समूह उन कटु अनुभवों को समझ पा रहा था जिनसे म्यांमार के कई प्रचारक होकर गुजर चुके हैं और अभी भी उन बुरे अनुभवों से होकर गुजर रहे हैं।

उदाहरण के लिए, एक प्रचारक ने यह बताया कि इस सभा में आने से दो दिन पहले ही, उसके एक प्रचारक मित्र के चर्च की इमारत को नष्ट कर दिया गया था।

इसी तरह, शालोम के दर्शनों की खोज करते समय, और कल्पना की शक्ति के बारे में सोचने और बात करने में कुछ समय बिताने के बाद, एक प्रचारक ने यह प्रश्न पूछा, "क्या होगा अगर हम कल्पना नहीं कर पा रहे हों या यह ही नहीं जानते हों कि हमें क्या कल्पना करनी चाहिए?" यह एक उदास कर देने वाली बात थी!

अतः, इस साथ में व्यतीत किए गए समय के अंत में, बहुत प्रार्थनाओं के पश्चात् सीखने, ढूँढने, बाइबल पढ़ने और उस पर चिंतन करने के बाद, उसी प्रचारक ने आने वाले समय में की जाने वाली प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालना शुरू कर दिया, जिसमें एक प्रार्थना भी शामिल है जिसे वे हमारे वैश्विक समुदाय को म्यांमार के लोगों के लिए प्रार्थना करने में सहायता करने के लिए, वे ही लोग तैयार कर रहे हैं क्योंकि वे अपने संदर्भ में मसीह की शांति की गवाही देना जारी रखते हैं।

Agus Mayanto

डीकन डैलीगेशन की मुलाकात के दौरान, म्यांमार से आए हुए अगुवों के साथ, कोलंबीया में शांति बनाए रखने से जुड़ी समस्याओं की बातों को ऐन्ड्रेस पचेको लोजानों साझा करते हुए।

हालाँकि, यह सफर अभी खत्म नहीं हुआ है। ला लूटा कंटीनूआ (आगे भी जारी रहेगा)।

परमेश्वर उनके साथ बना रहे। और हम यह सीखें कि कैसे हम उनके साथ और शांति के लिए उनके संघर्षों के साथ एक होकर रह सकते हैं।

—एंड्रयू जी. सुडरमैन, पीस कमीशन के सचिव हैं। वे हैरिसनबर्ग, वर्जीनिया, अमेरिका में रहते हैं।

Mennonite World Conference

गीत के बारे में जानकारी

शांति के गीत, स्विट्जरलैंड से एक बहुभाषीय संगीत प्रोजेक्ट, गायकों और संगीतकारों का एक संग्रह जो ज्यूरीक में यूरोप को एक अन्तराष्ट्रिय क्वायर के रूप में प्रस्तूत करते हुए।

वी वान्ट पीस

youtu.be/7KzDDlSnBRw

"वी वान्ट पीस" (हमें शांति चाहिए) सिर्फ एक गीत का शीर्षक नहीं है। यह एक बुलाहट है। एक प्रार्थना है। एक लक्ष्य है। हमने इस गीत को इसलिए लिखा है क्योंकि हम इस बात से सहमत नहीं हैं की हमारी समस्याओं का हल हिंसा है। 1948 में, दूसरे विश्व युद्ध की समाप्ति पर, वर्ल्ड काऊंसील आफ चर्चेस ने यह लिखा कि, "युद्ध परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध में है"। हम यह विश्वास करते हैं कि आज के समय में हमें इस संदेश को और भी अधिक स्मरण रखना चाहिए, विशेषकर हम जो मेनोनाईट है, और जब हम एक शांतिपूर्ण कलिसिया की रीत पर खड़े हैं, आज के समय में हमें हमारी आवाजों को उठाने की आवश्यकता है।

यह तीन भाषाओं में रचा हुआ गीत, विश्वभर में पाए जाने वाले मेनोनाइट लोगों की अन्तराष्ट्रिय पहचान का एक छोटा सा अंश को व्यक्त करता है। ज्यूरीक के ग्रौसमुंस्टर में, 80 से अधिक गायकों के एक बड़े अन्तराष्ट्रिय क्वायर द्वारा इस गीत का प्रस्तुत करना, हम गीत लेखकों के लिए भावविभोर करने वाला और हमारी पहचान को मजबूत करने वाला एक अनुभव रहा।

(जर्मन और फ्रेंच) में इस गीत के पद में यह कहा गया है कि:

> यह समय है कि तुम फिर से उठ खड़े हो और आशा से अपने
> आने वाले भविष्य को देखो।
> एक दूसरे के करीब हो जाओ, और जहां दुश्मन पाए जाते हों,
> वहाँ तुम अपनी तलवारों के चलने का त्याग कर दो।
> अपनी यात्रा का आरंभ करो, और जहां कहीं भी तुम जाओ, वहाँ
> अपने साथ आशीषों को लेकर जाओ,
> शांति के लिए अपने आप को समर्पित कर दो!

इस गीत के बारे में एक रहस्यपूर्ण व्याख्या जो जर्मन भाषा में लिखी गई है, उसे आप हमारे ब्लॉग में प्राप्त कर सकते हैं:

songsofpeace.ch/blog/wewantpeace

गीत के बोल, कौर्ड शीट एवं एसऐटीबी फुटनोट के लिये आप यहाँ स्कैन कर सकते हैं।

संगीत और बोल: डैनीस थीएल्मन © 2021 / फ्रेंच अनुवाद: मैरी दृ नोएल योडर
डैनीस थीएल्मन एवं करीन फ्रान्ज © 2025 के द्वारा रचित

songsofpeace.ch

शांति रविवार एवं ऐनाबैप्टीस्ट विश्व सहभागिता रविवार में, एम डब्ल्यू सी की सदस्य कलिसीयाओं की सभा में इस गीत के उपयोग किए जाने के लिए अनुमति प्रदान की गई है।

चलती सभा में या बड़े समूह की सभा में, इसे उपयोग में लाने के लिए, यहाँ से अनुमति प्राप्त करें, songsofpeace.ch/songs/wewantpeace या info@songsofpeace.ch पे संपर्क करें

वी विल मेक नो पीस वित औप्रेशन
"हम अत्याचार करते हुए शांति की स्थापना नहीं करेंगे"
youtube.com/watch?v=L57GTkvU8qo

गीत का सारांश

जो तलवार से जीते हैं वे तलवार से मार डाले जाएंगे। हम हर प्रकार के हिंसा के खिलाफ खड़े होंगे।

हम सड़कों में जुलूस निकालेंगे ("न्याय नहीं, शांति नहीं")। हम अपने पड़ोसी के साथ तब तक चलते जाएंगे जब तक हम सब स्वतंत्र न हो जाएँ।

हम अपने भाईयों के दर्द से, बहनों के रोने से, माताओं के शोक मनाने से हट नहीं जाएंगे। हम तबाह करने वाले राजनेताओं से, भरे हुए जेलों से, हमारे व्यवस्था में पाए जाने वाले भ्रष्टाचार से हट नहीं जाएँगे।

सर्वशक्तिमान परमेश्वर, हमारी सहायता कर की हम घबराए नहीं हमें तेरी सामर्थ प्रदान कर।

CCLI Song # 7158502
Latifah Alattas | Liz Vice | Paul Zach
© 2020 Integrity's Alleluia! Music; Paul Zach Publishing; Porter's Gate Publications
For use solely with the SongSelect® ~~Terms of Use~~.
All rights reserved. www.ccli.com